❋ 2 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] गुणवान बनना है तो– 1) किसी की भी देह को मत देखो। अपने को आत्मा समझो। एक बाप से सुनो, एक बाप को देखो। मनुष्य मत को नहीं देखो। 2) देह-अभिमान के वश ऐसी कोई एक्टिविटी न हो जिससे बाप का वा ब्राह्मण कुल का नाम बदनाम हो। उल्टी चलन वाले गुणवान नहीं बन सकते। उन्हें कुल कलंकित कहा जाता है।

2] आत्मा कितनी छोटी है। इस आकाश तत्व में देखो मनुष्य कितनी जगह लेते हैं। मनुष्य तो आते जाते रहते हैं ना। आत्मा कहाँ जाती है क्या? आत्मा की कितनी छोटी-सी जगह होगी! विचार की बात है। आत्माओं का झुण्ड होगा। शरीर के भेंट में आत्मा कितनी छोटी है, वह कितनी थोड़ी जगह लेगी।

3] बाप साफ कहते हैं हम हथेली पर बहिश्त ले आता हूँ। वो लोग हथेली से केसर आदि निकालते हैं, यहाँ तो पढ़ाई की बात है। यह है सच्ची पढ़ाई।

4] खामियाँ तो सबमें हैं। तो बाप सबको देखते रहते हैं। रिजल्ट देखते रहते हैं। बाप का तो बच्चों पर लव रहता है ना। जानते हैं इनमें यह खामी है, इस कारण यह इतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। अगर खामियां नहीं निकली तो बड़ा मुश्किल है। देखने से ही मालूम पड़ जाता है यह तो जानते हैं अभी टाइम पड़ा है।

5] बाबा कहते रहते हैं जो भी खामियां हैं इस जन्म की वह बाप के आगे आपेही बताओ। बाबा तो सबको कह देते हैं खामियां सर्जन को बतानी चाहिए। शरीर की बीमारी नहीं, अन्दर की बीमारी बतानी है। तुम्हारे पास अन्दर में काय-क्या आसुरी ख्यालात रहते है? तो इस पर बाबा समझायेंगे।

❋ योग-

1] देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध हैं, उनको भूल जाना है। आत्मा को देखो, एक परमात्मा बाप से सुनो, इसमें ही मेहनत है। तुम फील करते हो यह बड़ी सब्जेक्ट है। जो होशियार होंगे, उनको पद भी इतना ऊंच मिलेगा। सेकण्ड में जीवनमुक्ति मिल सकती है।

2] बाप को याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होते जायें। सजा नहीं खानी चाहिए।

❋ धारणा-

1] अवगुणों को निकालने का पूरा पुरूषार्थ करो, जिस गुण की कमी है उसका पोतामेल रखो, गुणों का दान करो तो गुणवान बन जायेंगे।

2] एक तो पढ़ना है, दूसरा अवगुणों को निकालना है।

3] पहले-पहले बुद्धि में बिठाना है, हम ईश्वरीय मत पर हैं। मनुष्य मत पर चलते नहीं, सुनते नहीं।

4] अवगुण छिपा देंगे तो कोई को इतना तीर नहीं लगेगा इसलिए जितना हो सके अपने में अवगुण जो हैं उनको निकालते जाओ। नोट करो, हमारे में यह-यह खामी है तो दिल अन्दर में खायेगी।..... यह बाप भी कहते हैं रोज़ अपनी चाल देखो। नहीं तो अपना नुकसान कर देंगे। बाप की पत (इज्जत) गंवा देंगे।

❋ सेवा-

1] पहले-पहले तुमको बाप का परिचय देना है, तुम बताते हो फलाना आरग्यु करते हैं। बाबा ने समझाया था, लिख दो हम ब्राह्मण अथवा बी.के. हैं ईश्वरीय मत पर तो समझ जायेंगे इनसे ऊंचा तो कोई है नहीं।

2] बोलो, भक्ति मार्ग के शास्त्र मत पर तो हम बहुत समय चलें। अब हमको मिली है ईश्वरीय मत। तुम बच्चों को बाप की महिना करनी है।

3] तुम समझते हो हम पढ़ रहे हैं। पाठशाला में आये हैं, **पाठशालायें तुम बहुत खोलो** तो तुम्हारी एक्टिविटी को देखें।